**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 8.4
IJAR 2021; 7(4): 263-267
www.allresearchjournal.com
Received: 14-02-2021
Accepted: 19-03-2021

**एस. एम. अली इमाम**
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

**डॉ. मुजम्मिल हसन**
प्राचार्य, डॉ० जाकिर हुसैन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज, लहेरियासराय, दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
शोधार्थी, शिक्षा-शास्त्र विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

# मुस्लिम छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक विकास में मदरसों की भूमिका

## एस. एम. अली इमाम, डॉ. मुजम्मिल हसन

**सारांश**
मदरसा अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ विद्यालय होता है। भारत के मदरसों में दी जानेवाली शिक्षा पर समाज में कई तरह की गलतफहमियां फैलाई गयी हैं। कुछ लोग मदरसों को मुस्लिम समाज में दकियानूसी विचार को फैलाने का आरोप तक लगाते रहे हैं तो वहीं एक खास विचारधारा के लोगों द्वारा मदरसों को आतंकवाद का अड्डा तक बताया जाता रहा है। लेकिन सच्चाई कुछ और है। आज भी मदरसे मुस्लिम समाज में शिक्षा संस्कृति के प्रमुख केंद्र हैं। आंकड़ों के अनुसार मुस्लिम समाज के बच्चों का कुछ हिस्सा अपनी प्राथमिक तालीम इन्हीं मदरसों में पाता है। मदरसा और स्कूल दोनों की शिक्षा एक ही है। अलग-अलग भाषाओं में कहने का अलग-अलग रिवाज है। जहाँ तक तालीम का संबंध है कुरान और हदीस की रोशनी में इल्म का एक ही मायने है शिक्षा। शिक्षा वह है जो लोगों को नफा पहुँचाये। इल्म ऐसा हो जो, एक तरफ नैतिक मूल्य को बढ़ाये, दूसरी तरफ समाज को रचनात्मक और सकारात्मक रूप से कुछ दे सके। पैगम्बर मोहम्मद जब इस दुनिया में आए तो कुरान की पहली आयत नाजिल हुई 'ईकरा', इसका संबंध पढ़ने से है। सनातन धर्म में, वेद 6 हजार साल पहले आए, उनमें इल्म पर विशेष जोर दिया गया है। लगभग सभी धार्मिक ग्रंथों में इल्म पर जोर दिया गया है। इल्म के बगैर इंसान के अंदर अख़लाक़ी क़दरें नहीं आ पाती हैं। वह प्राणावस्था में होते हुए भी जानवर की तरह होता है। जैसे जानवर खाते-पीते हैं, सोते हैं, प्रजनन करते हैं। शिक्षा इन्सानों को तहज़ीब देती है।

**कूटशब्द:** शैक्षणिक विकास, मदरसा, आतंकवाद, मुस्लिम समाज, नैतिक मूल्य

**प्रस्तावना**
मुस्लिम कालीन शिक्षा में मदरसों के द्वारा धार्मिक शिक्षा को ही प्रथम स्थान दिया गया था। जिस कारण मस्जिदों के आस-पास ही मदरसों का निर्माण करवाया जाता था। उस समय की शिक्षा राज्य एवं मुस्लिम बादशाहों के अधीन थी। वो ही शिक्षा के कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहायता मुहैया करवाते थे। उस काल में शिक्षा मुख्यतः भाषण के आधार पर ही दी जाती थी। उस काल मे मदरसों में खान-पान की व्यवस्था के साथ-साथ निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जाती थी। मुस्लिम काल मे शिक्षा दो आधार के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती थी –

**मकतब:** जिस स्थान में शिक्षा प्रदान की जाती है उसको मकतब कहते हैं मुस्लिम काल में प्रायः मस्जिद के पास ही मकतबों का निर्माण कार्य करवाया जाता था।

**मदरसा:** मदरसा का अर्थ होता है,भाषण देना। मुस्लिम काल में शिक्षा देने का माध्यम सदैव यही रहा हैं अधिकतर भाषण के माध्यम से ही उस समय शिक्षा प्रदान की जाती थी।

भारत वर्ष में मदरसा शिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है। इससे सम्बन्धित शिक्षा में विवाद ब्रिटिश काल से ही चला आ रहा है। विवाद का विषय मदरसा में दी जा रही तालीम थी। मदरसों में प्राय कुरान एवं हदीस की शिक्षा दी जाती है तथा इस्लामी कानून और शरिया के मसले और मसाइल भी एक विषय के तौर पर पढ़ाए जाते थे, जो कि ब्रिटिश सरकार के किसी काम के न थे। अंग्रेजों द्वारा शुरु की गई शिक्षा के निर्माण और विकास के दौर मे मदरसा शिक्षा अपने पुराने ढर्रे पर कायम रहने के कारण कहीं पीछे छूट गया। सरकारी निज़ाम में परिवर्तन के बाद, भारत सरकार ने शिक्षा से सम्बन्धित कई तरह के कानून बनाए, कई आयोगों का गठन हुआ जिसमें उच्च शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के विकास के प्रयास किए गए, पर मदरसों की स्थिति जस की तस बनी रही। भारत सरकार द्वारा सभी अल्पसंख्यक समुदाय को स्वंय की शैक्षिक संस्थाओं को चलाने और पाठ्य चर्चा को चुनने की भी स्वतंत्रता प्रदान की गई तथा उनके सांस्कृतिक तथा धार्मिक रीति रिवाजों को मानने तथा पालन करने की भी स्वतंत्राता दी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आई धर्मनिरपेक्ष सरकार देश में क्रान्तिकारी बदलाव लाना चाहती थी, सो उद्योग, कारखानों, कृषि, वाणिज्य, संचार आदि क्षेत्र में सरकार ने कार्य करना आरम्भ कर दिया, तथा राज्य ने सभी सरकारी स्कूलों में धर्मिक शिक्षा के बजाए अन्य विषय जैसे गणित, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान को बढ़ावा दिया। इस्लाम एक धर्म-निरपेक्ष राज्य में अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए जद्दो-जहद करने लगा तथा इस कारण मदरसा में इस्लामी शिक्षा का कड़ाई से पालन करने या किया जाने लगा, बिना इस बात की परवाह किए कि बदलते जमाने के साथ न चलने पर वह पिछड़ जाएगा, वह अपने खोल में सिमटता गया।

ज्यादातर मुसलमानों में सेक्युलर शिक्षा को लेकर कोई उत्साह नहीं था, क्योंकि वह शिक्षा को जीविकोपार्जन से जोड़कर देखते थे, और उसमें सपफलता न मिलने पर वह सेक्युलर शिक्षा को बेकार समझते थे तथा स्वयं के लघु एवं कुटीर उद्योग जैसे हस्तकरघा, बिनकारी, कढ़ाई इत्यादि में प्राप्त रोजगार के कारण वह मदरसा शिक्षा को ही पूर्ण मानते थे, उसमें भी लड़की एवं लड़कों में भेदभाव के कारण अक्सर लड़कियाँ मदरसा में भी किसी उँचे दर्जे की पढ़ाई करने से वंचित रह जाती थीं, और लड़को में से भी जो मदरसा में उच्च शिक्षा प्राप्त करते वह धार्मिक शिक्षक के रूप में कार्य करने लगते थे लेकिन इनकी संख्या भी नगण्य थी।

ऐसे में यह स्थिति ऐसे ही बनी रहती अगर, नए शताब्दी वर्ष में मुस्लिम आतंकवाद अपने चरमोत्कर्ष पेन आता। अचानक से मदरसा एवं मदरसा में चलने वाली गतिविधियों को शक के दायरे में देखा जाने लगा, मदरसों को आतंकियों की पनाहगाह तथा आतंकिओं के प्रशिक्षण केन्द्र के तौर पर प्रचारित किया जाने लगा। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मदरसा का नकारात्मक प्रचार होने के बाद, सरकार को अपने मदरसों एवं मुस्लिम समुदाय की याद आई तथा साल 2006 में सच्चर रिपोर्ट के जरिए एक व्यापक अध्ययन प्रस्तुत किया गया। इस रिपोर्ट में जो तथ्य सामने आए वो थे भारतीय मुसलमानों का निम्न शिक्षण स्तर, निम्नतर रहन-सहन, गरीबी, अशिक्षा तथा सरकारी नौकरियों में कम भागीदारी एवं सरकारी अर्थव्यवस्था में कम योगदान। इस सभी कारणों में से एक कारण जो कि निम्न शिक्षण स्तर है उसकी जमीनी पड़ताल करने की जरूरत है। क्योंकि यही वह कारण जिसके जरिए अन्य क्षेत्रों की समस्याओं के ऊपर भी कुछ प्रकाश डाला जा सकता है। मदरसा शिक्षा व्यवस्था आधुनिक परिवर्तनों से अपने आपको सचेत रुप से दूर रखते हैं।

भारतीय मुसलमान की अपनी बंदिशें भी है। उनके मन में अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए और बचाए रखने की परेशानी है। तमाम मौलवी और उलेमा, इमाम व अन्य धर्मिक गुरू अपनी तकरीर और मजलिसों के जरिए आम जनता को नई तकनीक व चलन से दूर रहने की हिदायत देते रहते हैं। वे सांस्कृतिक संर्कीणता को बढ़ावा देते है जिससे मुस्लिमों में ये संदेश जाता है कि पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का प्रभाव उनके लिए विनाशकारी और विध्वंसक है और वे सेक्युलर शिक्षा को पश्चिमी सभ्यता से जोड़कर देखते हैं, इसलिए वे सरकारी स्कूलों के बजाए अपने बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के लिए मदरसों को तरजीह देते हैं। क्योंकि वह ये समझते हैं कि जरूरी दीनी तालीम दिलवा कर वह अपने बच्चों को उनकी संस्कृति व रहन-सहन बनाए रखने के लिए तैयार करते हैं।

**मदरसों की कार्यप्रणाली:** अरबी फारसी मदरसा बोर्ड के आँकड़े बताते हैं कि अकेले बिहार में 4000 मदरसा हैं जिनमें से से भी केवल 1942 मदरसों को सरकारी सहायता प्राप्त है। अन्य सभी मदरसा समुदाय के चंदे एवं मदद से चलते है। इन मदरसों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए मदरसा ही केवल वह स्रोत है जिसके द्वारा वे औपचारिक शिक्षा ग्रहण करते हैं। इन सभी मदरसों में जिस पूरे पाठ्यक्रम पर सबसे अध्कि जोर दिया जाता है, वह दीनी तालीम है (कुरान एवं हदीस की शिक्षा)। हालांकि समय के साथ-साथ कुछ मदरसों में हिन्दी, गणित, अंग्रेजी, विज्ञान एंव सामाजिक विज्ञान के शिक्षण की व्यवस्था भी की गई है, लेकिन इन विषयों को पढ़ाने का तरीका भी दीनी तालीम को पढ़ाए जाने जैसा मौखिक ही है। मुख्यतः इन सभी विषयों को अगर पढ़ाया भी जाता है तो पारम्परिक विधियों द्वारा, वास्तव में मदरसा में बुनियादी स्रोतों की कमी के कारण इन विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षक अधिकतर प्रशिक्षित नहीं होते। क्योंकि सभी मदरसों के पास विषयीय स्रोतों की कमी होती है, तथा सभी को सरकारी सहायता प्राप्त भी नही होती, इस दशा के चलते होता ये है कि मदरसा के व्यवस्था एवं संचालन के लिए जिम्मेदार व्यक्ति एक प्रशासनिक अध्किारी के अनुपस्थिति में स्वयं ही कर्ता-धर्ता होने के नाते पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या, पढ़ाए जाने वाले विषय का शिक्षक, उनकी योग्यता तथा मदरसा में होने वाले सभी तरह के गतिविधियों के बारे में स्वयं ही फैसला लेते हैं। इसका यह मतलब निकला कि उस मदरसे में पढ़ने वाले विद्यार्थी क्या और कितना पढ़ेगें यह तय प्रशासन नहीं बल्कि संस्था/मदरसा स्वंय करेगी। और यही कारण है कि मदरसा से शिक्षित विद्यार्थी शिक्षा के उस स्तर तक नहीं पहुँच पाते जहाँ अन्य स्कूलों से पढ़ें विद्यार्थी जा पाते हैं।

आमतौर पर वह मदरसा जिन्हें न तो किसी तरह की सरकारी सहायता प्राप्त है और न ही वो किसी बोर्ड से सम्बद्ध है, लेकिन उनमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की तादाद अध्कि है, उन मदरसों में होने वाली पढ़ाई चिंता का विषय है, उसके अनेक कारण हैं- मदरसों में शिक्षा का माध्यम उर्दू व अरबी होता है तथा ज्यादा बल केवल दीनी तालीम को दी जाती है,व केवल कुछ ही अन्य विषयों की पढ़ाई होती है। जिन विषयों की पढ़ाई होती भी है तो वह उस विषय की केवल बुनियादी शिक्षा होती है, जैसे अंग्रेजी एवं हिन्दी विषय में केवल हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा लिखना एवं पढ़ देना ही उनका ध्येय होता है। जबकि हिन्दी एवं अंग्रेजी के विविध साहित्य और लिट्रेचर को नहीं पढ़ाया जाता। जबकि हम जानते हैं कि किसी भी भाषा में लिखा गया साहित्य, समाज के एवं मानवता के विभिन्न पहलुओं को छूता है और आम जन को दूसरों की दुख, दर्द और पीड़ा से अवगत कराता है, कमोबेश समाज की बुराइयों की तरपफ भी ध्यान आकर्षित करता है, और पढ़ने वाले के मन मस्तिष्क को न केवल झकझोरता है बल्कि समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंध्विश्वासों के प्रति सचेत भी करता है। तथापि साहित्य युवा मन को नए आयाम, नए सपने, उड़ने के लिए नया आकाश और सच्चाई को जानने के लिए विश्वास भी प्रदान करता है। लेकिन मदरसों में इस तरह से साहित्यिक विषयों को नजर अंदाज कर देने से वहाँ पढ़ रहे विद्यार्थियों को इन विविध्ताओं से वंचित कर दिया जाता है तो कोई इस बात पे कैसे यकीन कर ले कि विद्यार्थी अपने मन मस्तिष्क का इस्तेमाल वृहद् सोच के लिए भी कर सकते है? यही हाल विज्ञान, सामाजिक विज्ञान एवं गणित के विषयों के साथ भी है जहाँ विद्यार्थियों को अप्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा रटंत विधि से किताबी ज्ञान बाँचते देखा जा सकता है, और उन वैज्ञानिक मूल्यों एवं दृष्टिकोण का विकास, इन छात्रों में होना एक तरह से असम्भव ही हो जाता है। अन्य चिंता के विषयों में जो कारण है वे हैं इन मदरसों में शिक्षा दे रहे शिक्षक, ज्यादातर ये शिक्षक अन्य विषयों को पढ़ाने के लिए अप्रशिक्षित होते हैं, तथा मदरसों के पास अपने स्वयं की सीमित बजट में अच्छी तन्ख्वाह पर प्रशिक्षित शिक्षकों को रखना मुश्किल ही है। इसके अलावा मदरसा शिक्षक जो अधिकतर खुद मदरसों से ही पढ़े होते है या किसी सरकारी स्कूल से वो स्वयं भी अन्य विषयों को पढ़ाने के नए तरीकों के प्रति उदासीन रहते हैं, और इन विषयों को पढ़ाने में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न प्रकार के शिक्षण सामग्री का इस्तेमाल करने में स्वंय भी रूचि नहीं लेते। हालांकि मदरसों में दीनी तालीम की कक्षाएँ पाबन्दी से एवं अनुशासन के साथ पढ़ाई जाती है, पर अन्य विषयों के मामले में इनका बर्ताव सब चलता है वाला ही होता है जिससे विद्यार्थियों की भी इन विषयों में खास रूचि व जिज्ञासा नहीं उत्पन्न हो पाती। साथ ही साथ मदरसों में जैसा कि किसी भी अन्य धार्मिक शिक्षण संस्थान में होता है, खुद के धर्म में होने वाले रीति-रिवाजों, धार्मिक परम्पराओं एवं मान्यताओं को, तथा

महापुरूषों से सम्बन्धित किस्से कहानियों को ज्यादा प्रचारित किया जाता है, उन्हें विद्यार्थियों के सामने बार-बार दोहराया जाता है, उन गुणों को, तथा परम्पराओं को आत्मसात करने की लगातार हिदायत दी जाती है, उन्हें लगातार ईश्वर का भय और प्रकोप के बारे में बताया जाता है, बाल मन इन सभी बातों को यकीन करते हुए साहित्यिक पक्ष एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण से दूर होता जाता है। निस्वाँ (छात्राओं) मदरसाओं में इन सभी समस्याओं के अलावा भी कुछ समस्याएं है जैसे-

1. लड़कियों के पाठ्यक्रम और पाठ्य चर्चा में इस्लामिक विचारधा को प्रमुखता दी जाती हैं साथ ही साथ उन्हें अदब, आदाब और तहजीब की खासतौर पे हिदायत दी जाती है। लड़कियों की शैक्षिक प्रत्याशाएँ इस पर निर्भर करती हैं कि समाज उनसे क्या करने की अपेक्षा करता है, भविष्य में वे एक बेहतर पत्नी तथा माँ की अपनी भूमिका का निर्वहन कर सकें, इस वजह से उनके जीवन का पूरा तालीमी दौरा गृह विज्ञान जैसे विषयों तक सिमट के रह जाता है। अनेक निस्वाँ मदरसा में दीनी तालीम के साथ-साथ गृहकार्य में दक्षता वाले गुण जैसे सिलाई, कढ़ाई, बुनाई इत्यादि सम्बन्धित क्रिया-कलाप भी कराए जाते हैं और पूरा जोर उन्हें एक बेहतर गृहणी बनाने के ऊपर होता है।
2. बचपन से ही इन मदरसों में पढ़ने वाली लड़कियों की स्वयं की शैक्षिक प्रत्याशाएं एक न्यून स्तर तक ही पहुँच पाती है, जहाँ वो खुद को केवल गृह कार्य में दक्ष एवं साक्षर बनना चाहती है। इन बालिकाओं का देश के जीडीपी में कोई योगदान नहीं रहता तथा ये स्वयं भी आर्थिक तौर पर अपने आपकों परतन्त्रा ही देखती हैं। न्यूनतम शैक्षिक प्रत्याशाएँ होने के कारण निस्वाँ मदरसा की छात्राएँ अपने लिए कोई व्यवसाय या करियर भी नहीं देख पाती, साथ ही इनकी शैक्षिक अर्हता, इन्हें उस स्तर तक भी नहीं ले जा पाती जहाँ से किसी व्यवसायिक कोर्स में एडमीशन ले या और किसी अन्य तरह का प्रतिष्ठित करियर चुन सकें।
3. मदरसा में पढ़ने वाली छात्राओं को अन्य तरह के भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। ये भेदभाव उनके माता-पिता से शुरू होकर उनके मदरसों की शिक्षिकाओं तथा मदरसा के मैनेजिंग स्तर तक देखा जा सकता है। सख्त पर्दा प्रथा, निस्वाँ मदरसा में किसी पुरूष शिक्षक का न होना, महिला शिक्षिकाओं द्वारा लड़कियों पर कड़ा पहरा लगाना, समय-समय पर उन्हें पवित्राता और नए जमाने के चाल (पश्चिमी सभ्यता) का हवाला देकर हिदायत करना, ये सारी गतिविधियाँ, मदरसा को सांस्कृतिक पुनरूत्पादन का एक औजार बनाए रखती हैं। मदरसा का अपना माहौल तथा वातावरण अव्वल दिन से ही छात्राओं को इन विचारों को अपनाने पर जोर देता रहता है, जिससे की सांस्कृतिक पुनरूत्पादन हो सके और वे अपनी संस्कृति को बचा के रख सकें, बिना ये समझे कि छात्राओं की विषय चुनने में अपनी भी कोई इच्छा या रूचि हो सकती है। आश्चर्य इस बात पे नहीं की दुनिया की आधी आबादी स्त्रियों की है, हैरत तो इस बात की है कि आधी आबादी को छोड़कर हम पूरी दुनिया के तरक्की की बात कैसे कर सकते है? इसके लिए जरुरी यह है कि छात्राओं को उनकी रुचि के विषय चुनने की ना केवल छूट दी जाए, साथ ही साथ उन्हें अन्य विषय पढ़ने को प्रोत्साहित भी किया जाए।

## निष्कर्ष

यह कहना उचित होगा कि मुस्लिम शिक्षा समाज के लिए उतनी उपयोगी नहीं हो सकी जितना उसे होना चाहिये था और मुस्लिम काल में कुछ ऐसी प्रथाएं भी विद्यमान थी, जिस कारण लड़कियों के लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत कठिन कार्य था और उस काल में लड़कियों को उच्च शिक्षा से भी वंचित रखा जाता था , यह कहना गलत नहीं होगा कि मुस्लिम काल में महिलाओं की स्थिति काफी दयनीय थीं, परंतु मुस्लिम शिक्षा प्रणाली (Muslim Education System in Hindi) में कुछ अच्छी बातें भी थी जो स्मरण रखने योग्य हैं जैसे निःशुल्क शिक्षा, कला पक्ष में विशेष स्थान एवं छात्रवृति प्रदान करने जैसी बातें सदैव स्मरण रखने योग्य हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि मदरसा ने सदियों से इस्लामिक शिक्षा को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाई है, साथ इस्लामिक विचारों के विकास एवं मुस्लिम समुदाय की प्रगति में महत्तवपूर्ण भूमिका अदा की

है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मुस्लिम समुदाय का कोई ऐसा पहलू नहीं है जो मदरसे से अछूता रह गया हो। मदरसे ने समाज के सभी वर्गों को प्रभावित किया। अगर हम इसका इतिहास देखे तो पता चलता है कि महान विद्वान दर्शनशास्त्री एवं गणितज्ञ आदि को जन्म दिया, परन्तु अगर हम आज के परिपेक्ष्य में देखें तो इसकी स्थिति काफी पिछड़ी हुई है, इसको रूढ़ीवादी जबकि आधुनिक शिक्षा को प्रगतिशील माना जाता है। आज जब मदरसा विद्यार्थी डिग्रियाँ लेकर प्रतिवर्ष रोजगार की तलास में बाहर निकलते है तो उन्हें किसी मुल्क में उम्मीद की कोई किरण नहीं दिखाई देती हैं।

## सन्दर्भ


1. अली, एमडी. एम. एंड किशोर, के. (2014). सेक्युलर एटीटयूड: अ स्टडी ऑफ़ मदरसा स्टूडेंट्स, इंडियन जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च
2. हक़, ए. एच. एम. (2013). स्टेटस ऑफ इस्लामिक स्टडीज एंड मदरसा एजुकेशन इन इंडिया: ऍन ओवरविव, जर्नल आफ हुमानिटीस एंड सोशल साइंस
3. अल-ज़ीरा, ज़ेड. (2011). होलनेस एंड होलीनेस इन एजुकेशन: अन इस्लामिक प्रस्पेक्टिव, हेर्नडो, वी अ: इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ इस्लामिक थॉट
4. सिकंद, वाई. (2004). रेफोर्मिंग दी इंडियन मदरसा: कंटेम्परोरी मुस्लिम वौइस, एशिया पसिफ़िक सेंटर फॉर सिक्यूरिटी स्टडीज
5. मियासाहिब, एम. (1991). अल-हदीस: एन इंग्लिश ट्रांसलेशन एंड कमेन्ट्री, नई दिल्ली: इस्लामिक बुक सर्विस